नई दिल्ली
अंक – 119

श्री साई शके : 31
फरवरी–मार्च– 2013

।। ॐ श्री साईनाथाय नमः।।

।। ॐ श्री सद्गुरूनाथ दादाय नमः।।

Publisher
Sri Saikalp Adhyatm Sanstha
"Sai Niketan"
New Delhi - 110025
Ph. : 26956561
E.mail : saikalp@gmail.com
dadab6@gmail.com
Web : saishraddha-world.com

Patron
Lalita Bhavani Shankar Bhatte

Editorial
Vijay Kumar Varma
Jogesh Grover

Subscription
Inland
Yearly : Rs.250.00
Life time : Rs.1000.00

Overseas
Yearly : US$ 250.00
Life time : US$ 500.00

Printed By
Shaarp Advertising
Cell : 09810284136

Published Every Month
©All rights reserved with Publisher

प्रतिमा – भाग 3 (स्थित्यंतर अवस्था)

वं. दादाजी ने कृपावंत होकर जो प्रतिमाएँ हमें प्रदान की है उनका स्वरूप ज्ञान, भक्ति, सेवा, जीवन को सार्थकता और फिर कर्म यज्ञ, ज्ञान यज्ञ, धर्मयज्ञ, मानवता इन अवस्थाओं में किस प्रकार प्रकट होता है। इसका विचार हमने पहले दो भागों में, जानने की कोशिश की, लेकिन इन स्वरूपों की पहचान होने के लिए हमारी अवस्था में प्रतिमाओं का वह स्वरूप स्थित्यंतर होना अत्यंत आवश्यक होता है। इस स्थित्यंतर अवस्था की सिद्धता भी श्री गुरू ने प्रतिमाओं के माध्यम से कर के रखी है लेकिन उसकी प्राप्ति के लिऐ हमें अवधान और आचरण की आवश्यकता होती है। इस स्थित्यंतर अवस्था का हमें जीवन में अनुभव लेना है तो ही हम अपनी अवस्था को समझकर अपनी उन्नती कर पायेंगे। अगर सम्भव नहीं तो दस साल या पचास साल भी हमने इस मार्ग का लाभ लिया लेकिन प्राप्त क्या हुआ यह समझना मुश्किल होगा।

जनम को आये हर मानव की स्थिति अवस्था होती है जैसे IRON या GOLD, मिट्टी में होता है वह उसकी स्थिति अवस्था है। जब तक उस अवस्था में बदलाव नहीं होता मतलब स्थित्यंतर नहीं होता तब तक दुनिया को उसका लाभ नहीं मिलता। उसी प्रकार इस जगत की सभी चीजों में स्थित्यंतर होकर उसका लाभ दुनिया प्राप्त कर पाती है। मनुष्य जन्म यह भी एक मिट्टी की तरह स्थित अवस्था है; अगर उसमें स्थित्यंतर नहीं हुआ तो वह मिट्टी की तरह जीवन व्यतीत करके आखिर में देह मिट्टी में छोड़कर चला जाता है। उसके जीवन का लाभ दुनिया को हो, इसलिये उसके जीवन में स्थित्यंतर होना आवश्यक होता है और यह श्री गुरू ही कर सकते हैं।

वं. दादाजी ने स्थित्यंतर अवस्था दो स्वरूपों में प्रतिमाओं के माध्यम से सिद्ध की है।

◆ स्थित्यंतर अवस्था–पहला स्वरूप : प्रतिमा पुरातन काल में अधिकारी ऋषि मुनियों ने ब्रह्माण्ड शाक्ति के अंश को आह्वान कर उसे देवदेवताओं की मूर्तियों में स्थित्यंतर किया था, जिससे दुनिया को उसका लाभ हो सके। यह लाभ प्राप्त करने के लिए उन अधिकारी गुरूजनों ने उसे एक आकार प्राप्त कर दिया, जिसके आह्वान के लिए यम–नियम, आहार–प्रत्याहार, पूजा–शोड़षो–प्रचार (आचमन, फूल, फल इत्यादि से तीर्थ, प्रसाद एक अनेक औपचार) इत्यादि का बंधन डाला। यह पूरा किया तो उस शक्ति का आह्वान होता है, फिर उस शक्ति की धारणा और फिर उसका विनियोग (उपयोग)।

आज की दुनिया में मनुष्य का जीवन इतना गतिमान हो गया है कि सामान्य जनों को षोडशोपचार विधी, यम–नियम इत्यादि का अभ्यास करने के लिए भी समय नहीं है। इसीलिये उस शास्त्र का आज विडंबन (मिमिक्री) और विटंबना (बाधित) हो गई है। इसी वजह से उस शक्ति का आह्वान होना भी बहुत मुश्किल है, उसकी धारणा और विनियोगिता काफी आगे की बातें है।

ऐसे आज के कठिन समय ने दुनिया को ईश्वरी शक्ति की प्राप्ति सहजता से कर देने के लिये वं. दादाजी ने प.पू. बाबा के मार्गदर्शन अनुसार श्री शक्तिपीठ की स्थापना और प्रतिमाओं की सिद्धता की। इनमें आज ब्रह्माण्ड शक्ति के तीनों तत्व समानता से समाये है, जो आज देवताओं की मूर्तियों में मिलना भी मुश्किल है। आज मानवी देह ब्रह्माण्ड शक्ति की धारणा कर दुनिया को देने के लिए तैयार नहीं है (विकसित नहीं है।) इसलिए वह शक्ति का आह्वान तो वं. दादाजी ने शक्तिपीठ और प्रतिमाओं में कर दिया है। यह प्रतिमा ANTENA का काम करती है जो की गुरूशक्ति की RECIEVER और TRANSMITTER है

ब्रह्माण्ड शक्ति का लाभ आसानी से इस दुनिया को हो इसलिए प्रतिमा सिद्ध करके पहले स्वरूप का स्थित्यंतर वं. दादाजी ने किया। यह करते समय उनके शरीर पर चार बड़े आघात हुए (HEART ATTACK , CEREBRAL STRORE)। उन्होंने गुरूकृपा से सभी सिद्धता यशस्वी रूप से की जिससे अखंड स्वरूप में दुनिया को लाभ हो।

यह गुरूशक्ति की धारणा उन्होंने की और उसे धारण करके प्रवाहित करने के लिए चार प्रमुख साधन (आरती साधना, ऊँकार साधना, मुलाकात साधना और कामकाज) इनकी सिद्धता भी की। यह साधन कार्यान्वित करने के लिए 'सेवक अवस्था' की सिद्धता भी उन्होंने ही की। इनकी सभी सिद्धता वं. दादाजी ने हमारे सामने रखी है और वे चाहते है कि हमारे माध्यम से दुनिया को कुछ तो लाभ हो। खुद के लिए मनुष्य को सौ जन्म भी प्राप्त हो सकते हैं, लेकिन ईश्वरी कार्य के लिए जन्म मिलना यह नसीब लाखों लोंगो में किसी एक को प्राप्त होता है, वह भी कोई प्रखर तपःश्चर्या करने के बाद। आज यह अवस्था हमारे सामने रखी है और बाबा ने कहा है कि, "अरे, तू मेरा बेटा है। मैं देता हूँ; तू लेते जा। सोचो मत, गिनती मत करो। ये दान नहीं है; बेटा, ये खैरात है।"

शायद हमें इस अवस्था की अभी तक पहचान नहीं है। हमारा तो कार्य जन्म नहीं है; हमारा कर्म अवस्था का जन्म है और अभी भी हम अपनी आदतों से कर्म के इच्छा और वासना के लिए ही इस कार्य का लाभ ले रहे हैं लेकिन श्री गुरू को विश्वास है कि जो गुरू बीज वे हमारे माध्यम में डाल रहे हैं वह एक ना एक दिन विकसित होगा। इसीलिये उन्होंने कृपावंत होकर स्थित्यंतर अवस्था का दूसरा स्वरूप सिद्ध करके प्रतिमाओं के माध्यम से कार्यान्वित कर रहे हैं, जिससे हमारे कर्म की अवस्था में स्थित्यंतर होता हैं यह प्राप्ति करने के लिए नियमित रूप से ऊँकार साधना, आचरण (परमार्थ प्रश्नावली) और अवधान इनका अनुसरण करना जरूरी है।

<u>स्थित्यंतर अवस्था</u> – दूसरा स्वरूप (कर्म यज्ञ की अगली अवस्था)

हमें पता है कि मनुष्य जन्म तीन प्रकार का होता है :

1. कर्म जन्म (इच्छा या वासना)

2. कार्य जन्म

3. कारण जन्म

इसका मायना यह है कि प्राप्त हुआ कर्म की अवस्थाएँ इन तीनों अलग अलग प्रकार से कार्यान्वित होती है। कोई भी जीवन प्राप्त होने के लिए कर्म आवश्यक होता है। जिस प्रकार का कर्म है उस प्रकार का जन्म मिलता है।

<u>1. कर्म जन्म</u> : इस प्रकार के जन्म में प्राप्त हुआ कर्म की अवस्था ऐहिक सुखों के प्रति प्रमुख रूप से प्रभावित रहती हैं इन सुखों की लालसा अपनी जरूरत पूरी होने तक सिमित हो तो इच्छा जन्म और वह लालसा अपनी जरूरतों से ज्यादा हो तो वासना जन्म होता है।

इस कर्म की अवस्था के साथ उस व्यक्ति के पास कुछ हद तक कार्य और कारण अवस्था का कर्म भी होता है। लेकिन इच्छा और वासना की अवस्था का कर्म जीवन DOMINATE करता है और इस प्रकार के जन्म को कर्म जन्म कहते हैं।

<u>2. कार्य जन्म</u> : कार्य अवस्था का कर्म?

स्थूल रूप में हर एक व्यक्ति के पास कुछ कार्य अवस्था का कर्म होता है। हम जो दफ्तर में काम करते हैं या कोई इमारत बांधने का काम करता है, इस प्रकार से हर एक आदमी दुनिया की तरक्की के लिए कोई न कोई कार्य करता है, वह कार्य अवस्था का कर्म होता है। लेकिन कार्य जन्म में यह कार्य अवस्था का कर्म प्रधान होता है और वह व्यक्ति दुनिया के लिए खुद का जीवन समर्पण करता है, मतलब व्यवहार में मिलने वाले अच्छे डॉक्टर, समाज सेवक, शास्त्रज्ञ से लेकर, साधू–संत, ऋषि मुनीयों तक।

<u>3. कारण जन्म</u> : कारण अवस्था का कर्म

इस अवस्था का कर्म भी हर एक व्यक्ति के पास होता है और जब जक वह कर्म प्रधान होकर कार्यान्वित न हो, तब तक उस आत्मा को जन्म को आना होता है। निरंतर समाधान, निरंतर आनन्द, 'सच्चिदानंद' यह इस अवस्था के कर्म का अनुभव है। ईश्वरीय कार्य के लिए जो अवतार कार्य करते है उनका कारण जन्म होता है।

इस मार्ग में हम सभी अपनी अपनी परेशानी दूर करने के लिए आए है। मतलब हमें अपने कल से तकलिफ थी, ऋणानुबंधों से थी या फिर हमारा देह अविकसीत था, जो आत्मिक शक्ति या दैविक शक्ति धारण कर खुद समाधान नहीं प्राप्त कर रहा था। इसी का मायना यह है कि सामान्य स्वरूप में हम सभी कर्म जन्म की अवस्था से जन्म प्राप्त करते हैं।

वं. दादा जी ने जो स्थित्यंतर अवस्था या कर्म जिसकी अगली अवस्था प्रतिमाओं में सिद्ध करके प्रदान की है, उससे जैसे आने वाला भक्त नियमित रूप से इस कार्य का लाभ लेने लगता है और प्रतिमा लेकर ऊँकार साधना करने लगता है तब विमोचन एवं दीक्षाएँ प्रवाहीत होकर उस व्यक्ति के कर्म का स्थित्यंतर करने लगती है।

श्री साईशक प्रतिमा – पादुका : श्री गुरू की पादुका में एक चरण सूर्यबिम्ब और दूसरा चरण चंदबिम्ब का प्रतिक होता हैं बायें चरण में इहलोक की शक्ति और दाहिने चरण में परलोक की शक्ति अधिष्ठित होती है। वं. दादाजी ने जब विश्व की तीनों शक्तियों को सौमय करके एकरूप किया और श्री शक्तिपीठ में अधिष्ठीत किया तब परलोक और इहलोक की शक्ति एक हो ऐसा आकार प्राप्त करा दिया। इस एक रूपत्व का प्रतीक याने पादुका – श्री साईशक प्रतिमा है। जिस साधन के माध्यम से यह सिद्धता साकार हुई वह ऊँकार श्री साईशक प्रतिमा के पिछले बाजू में है। श्री शक्तिपीठ स्थापना 14 अप्रैल 1983 में दशहरा के दिन हुई। श्री साईशक 1 मतलब विश्व शांति/विश्व बंधुत्व प्रस्थापित करने का युग शुरू हो गया। 1983 यह पहले साथ था इसीलिये श्री साईशक प्रतिमा में श्री साईशक 1 ऐसा लिखा गया है।

इस प्रतिमा की सिद्धता से इहलोग और परलोक का आकार एकरूप हो गया मतलब परलोक में जो कर्म है उसका लाभ भक्त को आसानी से और पूरी तरह होता है; जिससे परिवार में सुख, शांति और समाधान का आरम्भ होता है।

श्री कारण प्रतिमा : इसके पिछले बाजू में शेष (Snake) है; जो कि विमोचन और कुंडालिनी का प्रतिक हैं प्रतिमा के सामने की तरफ पृथ्वीतत्व और उसके बीच में 'ऊँ' है। इसका मतलब है भक्त का इहजन्म और गतजन्म गुरू कृपा से ALLIGN (ठीक ठाक– एक दूसरे का पूरक) होकर, इहजन्म में विमोचन साधन कार्यान्वित कर (वंश विमोचन, कर्म निवेचन, ऋणमोचन) कुंडालिनी जागृत करके भक्त का देह विश्व शाक्ति का (ऊँ) आसन (पृथ्वीतत्व) होने के काबिल बनाना। इससे गुरू भक्त के जीवन का कारण उदित होने लगता है।

श्री महाकारण प्रतिमा : इसकी सामने की तरफ पृथ्वी तत्व, जिसमें 'श्री' है और पीछे स्वास्तिक है। जब सेवक का माध्यम गुरूशक्ति का आसन बनने लगता है तब 'श्री' मतलब ज्ञान और विद्या (सरस्वती) उसमें कार्यान्वित होने लगती है। वही ईश्वरीय प्रेरणा है। इस प्रतिमा की सिद्धता से श्री गुरू सेवक के माध्यम का स्थित्यंतर करके इसमें से जीवन का महाकारण मतलब ईश्वरीय कार्य करने की सिद्धता कार्यान्वित करते है। यह ईश्वरीय कार्य उस भक्त के माध्यम से विश्व की आठों दिशाओं में कार्यान्वित हो इसलिए निचे की तरफ स्वास्तिक है, मतलब ईश्वरीय शक्ति का (PROGRESSION) आठों दिशाओं में होना।

श्री नारायणी प्रतिमा : महाकरण उदित करके जन्म लेनेवाले 'नर' का स्थित्यंतर 'नारायण' अवस्था में करने की सिद्धता इस प्रतिमा में श्री गुरू ने अधिष्ठित की है। इस पर श्री शक्तिपीठ और उसमें पृथ्वीतत्व है, जिसमें श्री ऊँ और स्वास्तिक है। उसी पृथ्वीतत्व के चारों कोनों में ना, रा, य, णी लिखा है। नवनाथों की सिद्धता सौम्य स्वरूप देकर वं. दादाजी ने श्री साईनाथ महाराज जी के आज्ञानुसार कार्य करके को इसीलिये इन तीनों विभुतियों का नाम श्री नारायणी प्रतिमा पर है।

किसी भी व्यक्ति के लिए इस जन्म में इसके आगे प्राप्त करने के लिए कुछ भी नहीं है। विश्व का अत्युच्च साधन सिद्ध करके श्री गुरू ने हमारे सामने रखा है।

इस अवस्था तक जाने के लिए श्री गुरू हमारे कर्म का स्थित्यंतर करते रहते हैं। उसका अनुभव और बोध लेना हमारा कर्त्तव्य है।

इस स्थित्यंतर अवस्था में जाते समय जो अनुभव आते है उसका अध्ययन करना जरूरी होता है। प्राथमिक रूप में इस कार्य का लाभ लेने के बाद मन की दृढ़ता, विश्वास बढ़ता है। जीवन जीते समय CONFIDENCE आना है। फिर कुछ ऐसे अनुभव आते है कि हमें लगता है कि अगर दुनिया में कहाँ ईश्वर है, तो वह यहीं हैं, दादा–बाबा के पास। यह अनुभव है जिससे अपनी श्रद्धा बढ़ती है उसे जिन्दगीभर याद रखना जरूरी है, क्योंकि जब सबूरी लगती है तब वे अनुभव ही साथ देते है। इसके आगे चलकर कुछ समय कार्य का लाभ लेने के बाद हमें उसमें कुछ कमियाँ है या अन्य भक्तों में/सेवकों में कुछ कमियाँ है ऐसा महसूस होने लगता है। तब अपने आचार–उच्चार और विचारों पर अवधान रखना अत्यंत आवश्यक होता हैं यह विश्वास पैदा करना जरूरी है कि यह ईश्वरीय कार्य है और गुरू की आज्ञानुसार वह चलता है और चलता रहेगा। अगर फिर भी कोई बुरी बातें हमारे दिमाक में आ रही है तो उसके लिए दादा–बाबा से प्रार्थना करनी चाहिये; लेकिन हमारे इस प्रकार के विचार से अगर कभी श्रद्धा कम हुई तो उसके जैसा **प्रमाद** नहीं है।

इसके बाद जब भक्त/सेवक अगली अवस्था में जाता है तब श्री गुरू उसके कर्म अवस्था के (इच्छा, वासना) कर्म का स्थित्यंतर करके उसे बाजू में रखकर उसे कार्य और कारण स्वरूप देते है। यह सिद्धता प्रतिमाओं के स्वरूप से कार्यान्वित होती है। इस अवस्था के अनुभव के दौरान, उस भक्त की या सेवक की कार्य की इच्छा की पूर्तता जल्दी नहीं होती क्योंकि गुरू उस कर्म का स्थित्यंतर करते है। इसलिए वं. दादा जी ने कहा है कि सेवक को कोई निराकरण नहीं है, आने वाले भक्तों की सेवा करने से ही उनका निराकरण हो जायेगा। इस अवस्था में श्रद्धा और सबूरी की आवश्यकता होती है।

जब गुरू कर्म अवस्था के कर्म का स्थित्यंतर कार्य और कारण अवस्था के कर्म में करते हैं तब उस सेवक के माध्यम से गुरूकार्य होने लगता है और उससे निरंतर समाधान या सच्चिदानंद अवस्था का अनुभव आने लगता है। इस प्रकार वह सेवक गुरूकार्य के लिऐ अपने जीवन का बलिदान देने के लिए तैयार होता है क्योंकि उसी में उसे आनन्द और समाधान है। यही अगले जन्मों की तरतूद और इसी जन्म के कर्म की स्थित्यंतर अवस्था है।

यह स्थित्यंतर अवस्था एक ना एक दिन आने वाले हर एक गुरूभक्त को प्राप्त होनी है। इसकी प्राप्ति गुरूकृपा से सभी को जल्द से जल्द हो यही प.पू. बाबा और श्री सदगुरूनाथ दादा के चरणों में प्रार्थना।

बाबू जी के मुलाखात

बाबूजी का फोन 20 जनवरी के आसपास सुबह सात बजे आया और उन्होंने मुझे बताया एक निहायत ही खूबसूरत, सादा व रूहानी शेर SMS के जरिये आया है। अर्ज है :

जन्म पे नंगे आये थे

इतना लम्बा सफर तय करना पड़ा एक कफ़न के लिए।

बाबूजी ने फिर मुझे कहा कि रवि, कुछ इस पर लिखो

मेरी प्रेरणा के स्त्रोत से बात होते ही अटकलें व उम्दा से ख्याल मेरे ज़हन में आने लगते हैं

जब तक 10–15 मिनट का अन्तराल बीता और यह विचार पूरे हुए, इतनी ही देर में बाबूजी ने फिर फोन करके एक सलीम बाबा का खूबसूरत शेर पढ़ा :

आये थे कब्र में सोने के लिए

दुआ जो मिली तो मज़ार हो गया।

बाबूजी ने फोन पर यह भी कहा कि रवि, जो भी इस मार्ग में है उसे गुरू वलय भी मिलता है जो कफन के साथ जाता है और हमारी रक्षा करता है।

बाबा, दादा के इस चमत्कार पर मेरे रोंगटे खड़े हो गये।

यह पहली बार नहीं है कि अक्समात कहीं से भी विचार मुझे पकड़ लेते हैं और मेरी लेखनी उन्हें काग़ज पर उतार देती है।

पर जो बाबूजी ने बाद में कहा वह मेरे द्वारा पहले ही लिखा जाये इसे मैं बाबा, दादा, व विभूतियों वह बाबूजी की अखण्ड कृपा व आशीर्वाद कहूँगा। हमने इस मार्ग से सब कुछ ही तो पाया है। पर मेरे लिए यह एक प्रमुख उपलब्धि है। लीजिये पेश है आपकी खिदमत में :

वजूद अपना बनाने में उमर बीत गई, एक चोला तब भी न इस बदन को मिला
जिस मकसद से इस मालिक ने जन्म बख़्शा है, उसे समझ पाने में ही एक अरसा बीत गया
कभी हुनर ढूंढ़ा तो कभी ऐशो आराम, खुद को पाना है, समझने में जनम बीत गया
यूँ तो समझते हैं खुद को खुदा का बच्चा, ये गुरूर मिटाने में बदन टूट गया
सफर तय तो किया हमने अंधे बन के, कफन जुटाने में मगर यह ही जनम बीत गया
क्यों ना इस मैं को छोड़ कर उस को देखें, एक लम्हें में वजूद अपना बदल जायेगा
मौत को याद जो सदा रख लेगें, तो कर्म सब सही होगें व गुरूवलय का पोशाक भी तो मिल जायेगा
ना रहोगे नंगे तमाम उम्र अब तुम, वापिस जाने के लिए सवाब भी तो मिल जायेगा
अरे बात छोटी सी है जो समझ पाओ तो, इस एक जन्म में ही मालिक का घर मिल जायेगा।

–रवि

।।शुभं भवतु।।

विनम्र निवेदन

अति हर्ष के साथ आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों को सूचित किया जाता है कि मासिक पत्रिका "तत्व बोध" का आगामी अंक एवं अन्य सूचना वेबसाइट पर एवं मेल द्वारा प्रेषित की जाएगी।

अतः आप सभी गुरुबंधु एवं भगिनियों से अनुरोध है कि आप सभी अपना ई–मेल पता एवं अन्य जानकारी यथाशिघ्र निम्न पते पर प्रेषित करें :

Sri Saikalp Adhyatm Sanstha

"Sai Niketan"

5, Jasola Vihar, New Delhi - 110025 Telephone : 26956561

E-mail : saikalp@gmail.com, dadab6@gmail.com

Please send your yearly subscriptions as early as possible